Annual Status of Education Report
असर ASER 2022 RURAL
Facilitated by PRATHAM

VOICES OF ASER

2022

Voices of ASER **is a collection of stories, experiences and memories of surveyors.**

CONTENTS

1: आखिर क्या है सर्वे असर	1
2: असर के सौ दिनों का सफर	2
3: Around India with ASER	3
4: Long Live ASER!	5
5: असर का सिपाही हूँ	8
6: असर जब भी आता है!	9
7: भविष्य की चिंता	10
8: असर साल-दरसाल	12
9: मुक्तक	14
10: My endless road to learning	15

11: ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका	18
12: असर क्या है ?	19
13: गाँव कहाँ दूर है जब दिल में फितूर है..	19
14: चित्रकारी का जुनून	20
15: The Spirit of Master Trainers in Gujarat	21
16: शिक्षा का एक नया सफर	23
17: चलो फिर इस बार असर करें	23
18: असर एक अभियान	24
19: The ASER Journey	25
20: मैं असर हूँ	26
21: असर ने दस्तक दी है	28
22: असर का असर	28

22: बच्चों के भविष्य को लेकर हमारी आशाएं 29

23: असर का रंग 31

24: असर की प्रासंगिता 32

26: It takes a village to raise a child 34

27: असर की असरदार यादें 36

आखिर क्या है सर्वे असर

आखिर क्या है सर्वे असर
जानते है हम इससे बच्चों का उच्चतम स्तर
गांव गांव में ये सर्वे है होता
शिक्षा का नया बीज है बोता
2005 से हर साल ये सर्वे होता
सुर्वेक्षक इस सर्वे में धैर्य नही है खोता
साल 2016 से होता है दो साल में एक बार
इसके नतीजे से बच्चों में आता निखर
इस सर्वे में मुख्य भूमिका निभाता संस्थान 'प्रथम'
देश की सेवा करने वालो का है इस संस्थान में वेलकम
अपने देश के लिए हमने यह सबसे बड़ा सर्वे है किया
खुद से देश के बच्चों के लिए कुछ करने का वचन है लिया
असर का असर सबको बता दिया
हमे गर्व है कि हमने से काम है किया
असर का असर जल्द दिखेगा
केवल नामांकन नही अब बच्चा अच्छे से सीखेगा

केशव डनसेना
स्वयंसेवक, छत्तीसगढ़

असर के सौ दिनों का सफर

गाँव मे जाकर पता लगाएं,
शिक्षा का अभियान चलाएं!
भारत के कोने कोने से,
शिक्षा का स्तर असर बताए!!
गांव स्कूल घर मे जाकर,
जांचने बच्चों का स्तर!
भाषा-गणित-अंग्रेजी का
पता लगाने उच्चतम स्तर!!
अक्षर वाक्य कहानी पठन,
असर करे बच्चों का जतन!
देकर सबको सरल शिक्षण,
बच्चों का करना है परीक्षण!!
अच्छी शिक्षा अच्छा ज्ञान,
कितना जरूरी ये है जान!
हर बच्चे को सीखना होगा,
बुनियादी भाषा संख्या ज्ञान!!
बूढ़े बच्चे हो या जवान,
सबका हो शिक्षा पे ध्यान!
कितने बच्चे सिख रहे हैं,
असर रिपोर्ट है रोशन दान!!

चंद्रशेखर भईया
असर टीम, झारखंड

Around India with ASER

ASER has taken me to a wide variety of landscapes. I have seen villages of Chhattisgarh, Uttar Pradesh, Uttarakhand, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, and Nagaland. All these names conjure different images in one's mind – in terms of terrain, socio-economic background, local norms, religion, culture, food habits, etc. That was what I thought too. And while it was true to an extent, I rediscovered the quintessential (and already quite well-established) truth: people, everywhere, have the same fundamentally human qualities. I am aware that this discovery is nothing new. In fact, it is quite a hackneyed statement. But when you see the same kindness, curiosity, integrity, diligence and faith in people from all over the country, it gives you a reassuring sense of belonging as a lone traveller in an unknown land.

When on the field, I have been a trainer, a surveyor, a monitor. A question that I have been asked on all my field visits is – "You must have been to other states too. How does the situation of education in our village/ district/state compare?" I often fumble while trying to answer that question. I do not have an answer nuanced enough to do justice to the curiosity and sincerity of the asker, so I often quote some

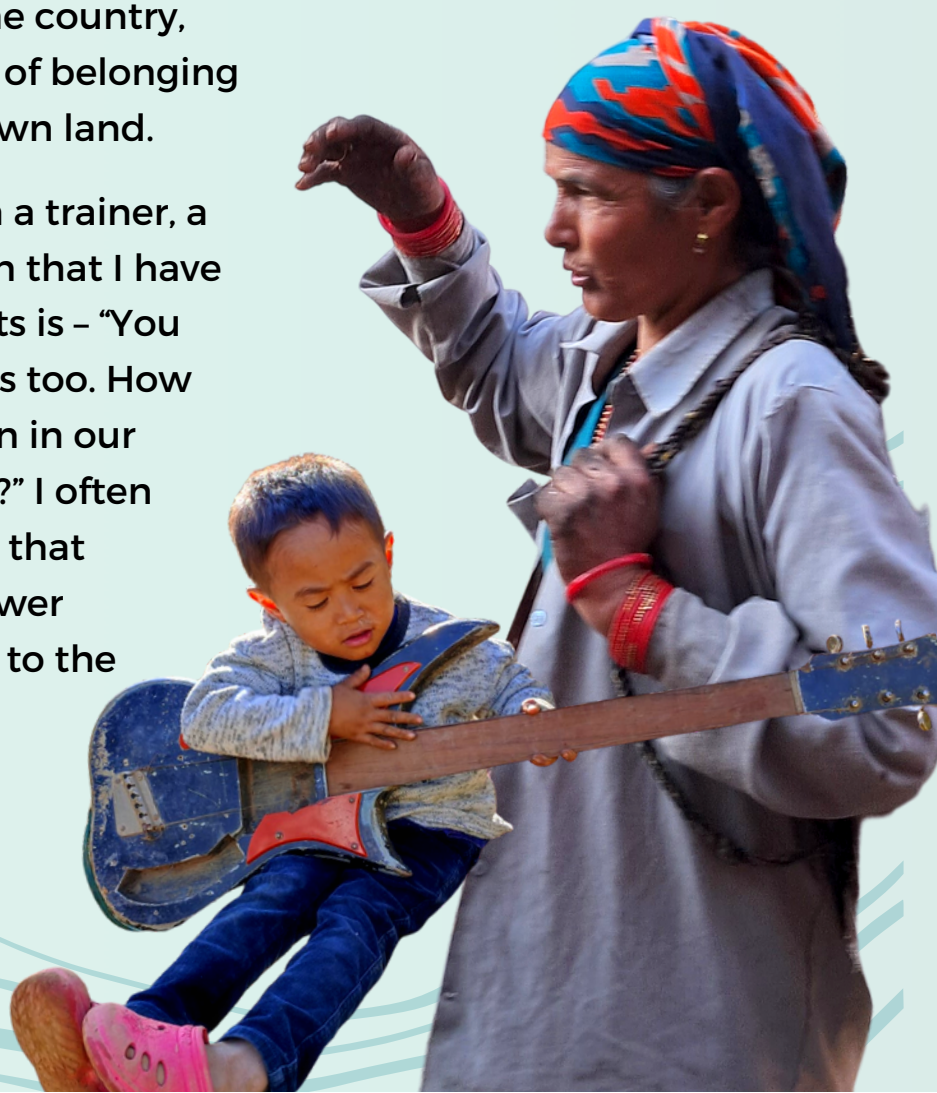

data points and try to sound optimistic. This conversation always humbles me, and makes me realise that the most important element of ASER are its volunteers- the citizens who make this citizen-led assessment possible.

ASER has made me appreciate the beauty of citizen-led assessments, and their far-reaching impact. ASER surveyors sometimes have to trek to difficult regions to reach their assigned village. They travel and stay in these regions with minimal facilities, and bring back data to represent their district. They undertake this massive voluntary effort because they have a persistent urge to be involved, and learn about their community. Most of these volunteers are young – they have the power to effect change. They know and believe that, and I do too.

Disha Trivedi
ASER Central Team

Long Live ASER!

In the first week of October 2018, I got the opportunity to visit the Noney district of Manipur for the monitoring of ASER 2018. The village I visited did not have a guest house or home stay, so I, along with the two volunteers stayed at the village head's house. The village was in a valley surrounded by magnificent green hills. The view was breathtaking. The time I spent here is etched in my mind as a beautiful memory.

As part of the survey, we observed the school infrastructure. And talked to some kids. They pose really well !!

Enthusiastic school children clicked during school observation in a remote village bordering Burma.

A moment with mother nature during village recheck.

BISHNULATPAM BIRLA SHARMA
Master trainer, Imphal East

असर का सिपाही हूँ

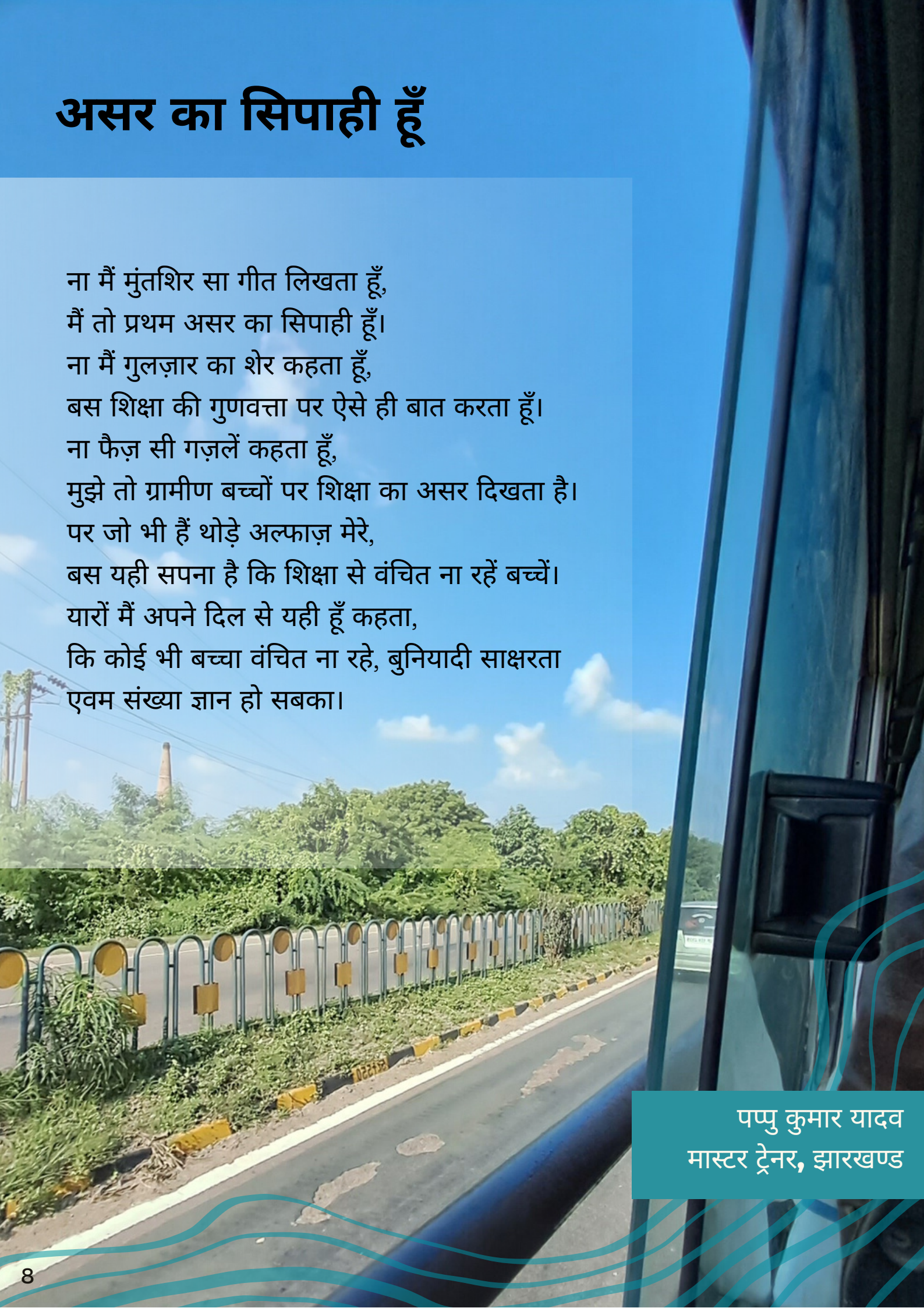

ना मैं मुंतशिर सा गीत लिखता हूँ,
मैं तो प्रथम असर का सिपाही हूँ।
ना मैं गुलज़ार का शेर कहता हूँ,
बस शिक्षा की गुणवत्ता पर ऐसे ही बात करता हूँ।
ना फैज़ सी गज़लें कहता हूँ,
मुझे तो ग्रामीण बच्चों पर शिक्षा का असर दिखता है।
पर जो भी हैं थोड़े अल्फाज़ मेरे,
बस यही सपना है कि शिक्षा से वंचित ना रहें बच्चें।
यारों मैं अपने दिल से यही हूँ कहता,
कि कोई भी बच्चा वंचित ना रहे, बुनियादी साक्षरता
एवम संख्या ज्ञान हो सबका।

पप्पु कुमार यादव
मास्टर ट्रेनर, झारखण्ड

असर जब भी आता है !

‘असर’ जब भी आता है
प्रारंभिक शिक्षा के हालात से
हमें साक्षात्कार कराता है,
मिलजुलकर आगे बढ़ने की
हमें एक राह दिखाता है।
असर जब भी आता है।

बच्चे कहाँ पे हैं,
हम कहाँ पे हैं,
और जाना कहाँ पे है,
यह राह हमें बताता है।
असर जब भी आता है।

नहीं सीख पाने के डर से
बचपन कहीं कुंठित न हो जाए
आओ हम मिलकर करें तैयारी
ताकि आगे की राह सुगम हो हमारी।
सभी बच्चे सीख सकते हैं,
यह दिशा और विश्वास जगाता है।
असर जब भी आता है।

शैलेन्द्र कुमार सिंह
प्रथम टीम, झारखंड

भविष्य की चिंता

यह बरसात का समय था जब मैं पिथौरागढ़ जिले के एक दूरस्थ गांव में असर सर्वे के दौरान मॉनिटरिंग के लिए निकल पड़ा। गांव जिला मुख्यालय से लगभग 120 किलोमीटर की दूरी पर था। कई घंटो के लंबे सफर के बाद मैं गांव पहुंचने ही वाला था तो पता चला कि गांव से 10 किलोमीटर पहले मुख्य सड़क का पुल कई दिनों से टूटा हुआ था।

और दूसरी तरफ जाने के लिए बहते हुए पानी से गाड़ियां निकाल कर लोग जा रहे थे जो कि जान जोखिम में डालने जैसा था क्योंकि ऊपर पहाड़ों पर कब पानी बढ़ जाए और नाला कब विकराल रूप ले ले इसकी किसी को जानकारी नहीं थी। कुछ समय के लिए तो मैं भी सोच में पड़ गया कि अब आगे जाना चाहिए या नहीं। लेकिन तभी मेरी नज़र विद्यालय जाते हुए कुछ बच्चों पर पड़ी। जो कि एक कच्चे लकड़ी के पुल से विद्यालय की तरफ जा रहे थे। इन बच्चों से बाते करके पता चला कि जिस दिन भरी बरसात से ये पुल टूट गया था उसी के तीसरे दिन गांव के बड़े और युवाओं ने यहां पर इस पुल का निर्माण किया था ताकि नदी के इस पार के 5 गांवों के बच्चे विद्यालय जा सके और अपनी पढ़ाई कर सके।

कुछ और लोगों से बात करके पता चला कि इस दूरस्थ इलाके में केवल एक ही इंटरमीडिएट विद्यालय है और कोरोना के कारण बच्चों की पढ़ाई में बहुत ज्यादा गैप आ गया था। इसलिए इस आपदा के कारण भी बच्चों की पढाई में कोई बड़ा गैप ना आ जाए ये सोचते हुए इस पुल का निर्माण सभी गांव के लोगों ने अपनी एकता का परिचय देते हुए यहां पर किया।

ये सब देखते हुए मेरा सारा डर निकल गया और मैने सोचा कि एक ओर जहां शहरों में सुविधाजनक स्थानों में स्कूल के बच्चें विद्यालय जाने के लिए गाड़ियों का इस्तेमाल करते हैं, वही दूसरी तरफ आज भी हमारे पर्वतीय राज्य में कई स्थान ऐसे हैं जहां बच्चों को विद्यालय तक पहुंचने के लिए ही अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती है फिर भी ये बच्चे निडरता से रोज विद्यालय जाते हैं। बच्चों और स्थानीय लोगों से बात करके पता चला की वे अपने बच्चों के भविष्य के लिए बहुत चिंतित रहते हैं और उनका मानना ये था कि पहले बच्चे को विद्यालय तक तो पहुंचाया जाय ताकि आगे की पढ़ाई की जा सके। क्योंकि हर स्थानीय का मानना था कि कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों की शिक्षा में बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है।

बच्चों और स्थानीय लोगो से प्रेरणा ले कर मैंने भी इस नाले को पार किया और गांव की मॉनिटरिंग करके सकुशल जिला मुख्यालय पहुंचा।

हिमांशु बिष्ट
असर टीम, उत्तराखंड

असर साल-दरसाल

श्याम कुमार कोलारे
असर टीम, मध्यप्रदेश

असर ने देखा है हर साल, बहुत सारे सुंदर गाँव
कभी भरी दुपहरी में घूमा है, कभी घनेरी छाँव
कभी समतल पर दौड़ा, कभी चढ़ा पहाड़ है
उबड़-खाबड़ रास्तों में भी, न डिगे कभी पाँव है।

असर ने वो दौर भी देखा,जब रास्ते गाँव के कच्चे थे
घंटो पैदल चलकर भी, असर करने गाँव पहुँचते थे
एक अनजाने गाँव में भी, देखो कैसे पहुँच जाते
एक अनजान रिश्ता, इन गाँव से जोड़ आते ।

गाँव के मुखिया से लेकर, घर-घर तक पहुँच बनी
गली मोहल्लों तक जाना, बच्चों से पहचान बनी
स्कूल शिक्षक को जाना, गाँव के बच्चों को पहचाना
जन-जन को पता हुआ, असर को हम सबने माना।

पूरा गांव दिमाग में बैठा, परिचित हुई हर गली
नजदीक से देखा गाँव को, हर मोहल्ला हर बस्ती
कुछ घरों की छत फूस से, बनी कुछ मिट्टी दीवाल
कुछ घर पक्की छत है, कुछ घरों में खपरैली ढाल।

शिक्षा का संज्ञान सुनकर, सब प्रसन्न हो जाते है
असर का असर है ऐसा, सब मन से जुड़ जाते है
बच्चों से बनाकर दोस्ती, सरल सहज हो जाते है
असर टूल से शिक्षा स्तर, तुरन्त माप हम जाते है।

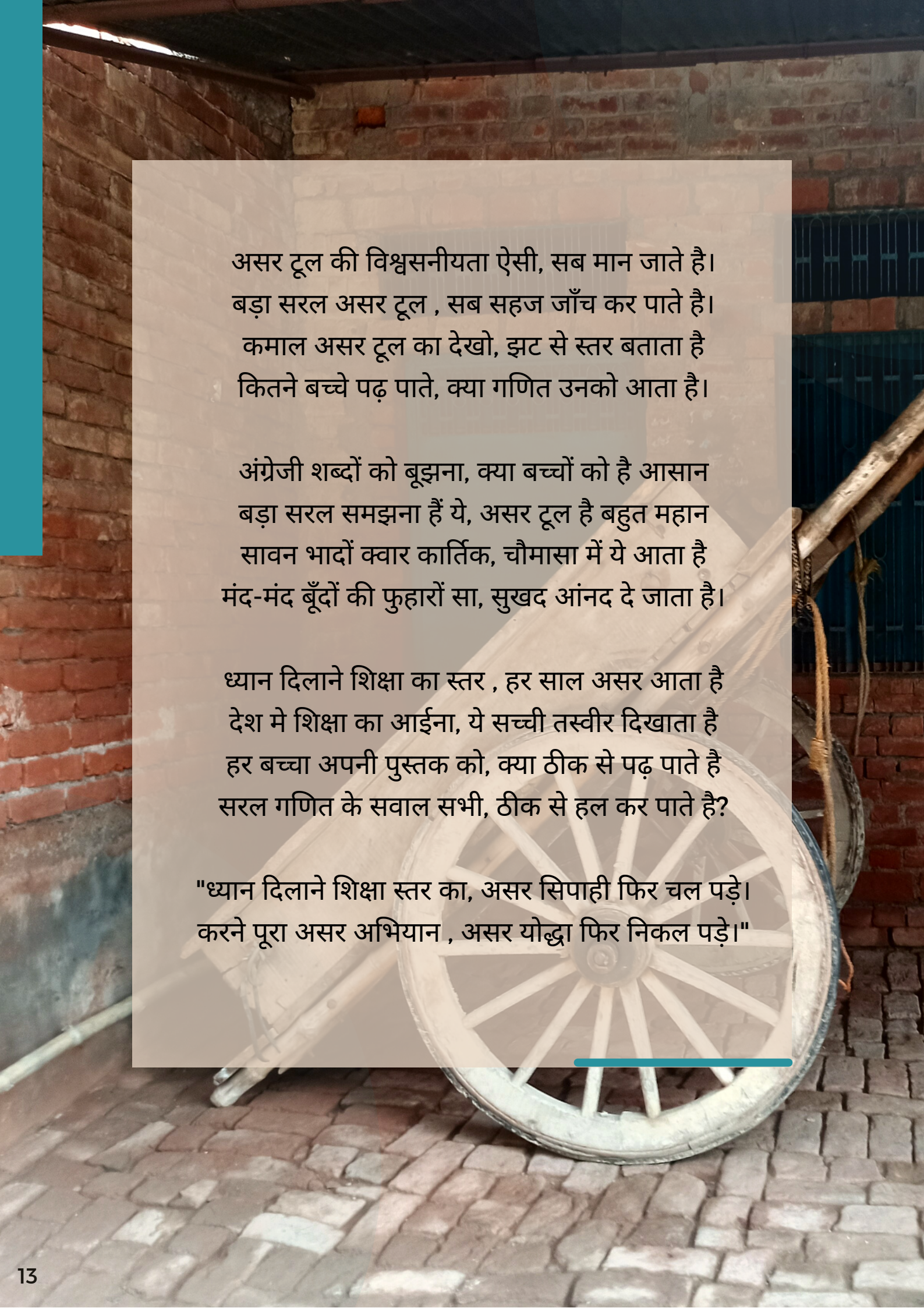

असर टूल की विश्वसनीयता ऐसी, सब मान जाते है।
बड़ा सरल असर टूल , सब सहज जाँच कर पाते है।
कमाल असर टूल का देखो, झट से स्तर बताता है
कितने बच्चे पढ़ पाते, क्या गणित उनको आता है।

अंग्रेजी शब्दों को बूझना, क्या बच्चों को है आसान
बड़ा सरल समझना हैं ये, असर टूल है बहुत महान
सावन भादों क्वार कार्तिक, चौमासा में ये आता है
मंद-मंद बूँदों की फुहारों सा, सुखद आंनद दे जाता है।

ध्यान दिलाने शिक्षा का स्तर , हर साल असर आता है
देश मे शिक्षा का आईना, ये सच्ची तस्वीर दिखाता है
हर बच्चा अपनी पुस्तक को, क्या ठीक से पढ़ पाते है
सरल गणित के सवाल सभी, ठीक से हल कर पाते है?

"ध्यान दिलाने शिक्षा स्तर का, असर सिपाही फिर चल पड़े।
करने पूरा असर अभियान , असर योद्धा फिर निकल पड़े।"

मुक्तक

पंकज पांडे
असर टीम, झारखंड

यूं कहो कि हर वर्ष यह पर्व होना चाहिए।
स्वयंसेवक हो तुम असर का गर्व होना चाहिए।।
सैकड़ों में तुम चुने हो यह भाग्य की तो बात है।
जी लो दूसरों के लिए अपनी तो ठीक हालात हैं।।

नई है राह नया कदम बढ़ा के हम चले।
असर के इस सफ़र में गुनगुनाते हम चले ।।
सही हुई है मेकप वर्षों से या नही,
उस चेहरे को आईना दिखाने हम चले।।

चल पड़े हैं गांव का दृष्य देखने।
देश के भविष्य का भविष्य देखने।।
बेखबर हैं जो गुलाब बागों में,
किस तरह से खिल रहे हैं हाल जानने।

मिली मंजिल नहीं अब तक तो क्यूं सुस्ता रहे हैं हम।
चले थे किस जगह जाने, कहां पे जा रहे हैं हम।।
यूँ कहते देश के भविष्य के भविष्य हैं बच्चे,
तो क्या इस देश के भविष्य को सजा रहे हैं हम।।

सभ्य इंसान बनने को यदि शिक्षा जरूरी है।
कोई बतलादे ये मुझको क्यूं ये इच्छा अधुरी है।।

My endless road to learning

Sneha Dash
ASER Team, Odisha

I want to share my journey in Pratham and ASER. I started my career in the education sector because I am fond of children. When I was in school on my way back home I used to cross a slum area. I would see children wandering or playing without a guardian.

At that time, I used to think about a solution for them. I would plan to sit with their parents to ask them if I could help out by teaching their children. That simple thought disappeared with my rigorous syllabus, but that spark to educate children stayed with me. I started helping young children in my residential building.

Time passed by. When I was doing my masters, I came across a few NGOs who were helping children. I could not let the opportunity go and wanted to associate myself with these organizations. Thankfully, I got the opportunity to work with Pratham. The fun activities, the Teaching Learning Materials (TLMs) fascinated me.

Quickly, I became a member of the team responsible for preparing TLMs. I can recall, when I was preparing materials, how enthusiastic I used to be. This interest led me to join ASER where I got to evaluate children's learning. ASER taught me to go deeper before preparing a learning material. This process pushed me to pursue a professional course in Education. I learned educational psychology and the pedagogical aspects which help children in learning.

With this interest I went further. I visited villages, schools, states, and the field experience enhanced my learning. I think that is why till today I never feel exhausted. With new experiences, new learnings I have always felt motivated.

Field experience is very helpful. When the ASER survey is ongoing, I visit many states. A few incidents have touched my heart. In 2010, during Maharashtra recheck, I visited 10-12 households. Every household greeted me differently. They sat me on a beautiful mat. They gave me a beautiful silk cloth, a pinch of turmeric, a handful of rice, chandan and sindur tilak. This ritual was followed by a sweet. They said, it is their culture. They greet their guests like this. I had never been greeted like this before.

Another story in Deogad district of Odisha. A small remote district full of greenery. The district is surrounded by jungles. In 2012, I visited many villages there for monitoring and rechecking. Communication and transportation facilities in the district are poor. We had to rely upon bikes. The road was on hilly terrain. We had to walk about 5-6 kms to reach the village. One can not imagine that there is a way to go to those villages or

people can live there. We can not call that a road. The life of villagers is full of struggles. A panchayat market happens once a week. Villagers would walk 5-6 km by foot to reach the market. They mostly depend upon rice and vegetables of their own field. They come to the market to get groceries, medicines, clothes, etc. If someone falls ill, they have to wait for the next weekly market. I asked a few villagers about their struggle. But they said, there is no struggle. They are used to this. This is life.

After joining ASER, I met our Research Associates and our directors. All of them are down to earth, understanding, and cooperative. My first Research Associates were Neha and Abhisek. They helped me raise my voice during training. Abhineet ji helped in personality development. Neeraj sir helped in being punctual, organized, and disciplined. These inputs helped me to become stronger. Above all our directors always keep pouring water on small plants like me. From them I have learnt not to get tired. It is like a family to me where everyone helps each other to grow.

Thanks to ASER Centre, I came to New Delhi for the first time to attend a workshop. I learnt other languages like Bengali and Marathi. I have met educationists, political leaders. I get calls from other NGOs to attend meetings. I have become more confident. ASER centre has transformed me from a college kid to an independent woman.

ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका

सर्वेयरों ने हुंकार भरा
सर्वेयरों ने वह उबाल भरा
एक-एक को बताता रहा
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...

चंद दिन पहले वह तैयार हुआ
लक्ष्य साधने गावों में निकल गया
देर शाम तक वह टिका रहा
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...

सर्वेयरों ने गांव वालो से कहा
घर-घर जाकर वह पूछता रहा
एक-एक बच्चे की पढ़ाई की जांच करता रहा
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...

ना भूक दिखी ना प्यास
लक्ष्य की रेखा वह खींचता रहा
असर सर्वे करने निकल पड़ा
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...

निष्चित ही कुछ फल मिला
करने को नया कल मिला
अगले लक्ष्य की ओर अब बड़ चला
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...
ना किसी से डिगा, ना किसी से झुका...

सुरेंद्र बैध
मास्टर ट्रेनर, छत्तीसगढ़

असर क्या है ?

हर वर्ष शिक्षा की जो देता खबर है,
हे प्रियवर! वही तो असर है।
खोजी प्रथम ने जो रस्ता बनाया है,
नागरिकों ने उस पर चल कर दिखया है।
सन 2005 से हर वर्ष यह जाना है,
कि कितनी सजी है बगिया और कितना सजाना है।
कितने फीसदी बच्चे नामांकित दिख रहे हैं,
कितने फीसदी भाषा–गणित सीख रहे हैं।
पोंधें लगे हैं बाग में तो कलियां भी खिलनी चाहिए,
नामांकित हैं बच्चे तो अच्छी शिक्षा भी मिलनी चाहिए।

गाँव कहाँ दूर है जब दिल में फितूर है..

असर सर्वेक्षण का छाया सुरूर है।
गाँव कहाँ दूर है जब दिल में फितूर है।।

हो कड़ी धूप चाहे बरसे बदरिया,
नदी–नाला कौन पूछे फांद जाएँ दरिया,
मन में है ठाना तो जाना जरूर है।
गाँव कहाँ दूर है जब दिल में फितूर है।।

शिक्षा के रंगमंच पर शमाँ बांधने चले,
झिलमिलाते दीप पर प्रकाश डालने चले,
तो थक करके चूर मुझे होना मंजूर है।
गाँव कहाँ दूर है जब दिल में फितूर है।।

पंकज पांडे
असर टीम, झारखंड

चित्रकारी का जुनून

मनोज कुमार शर्मा
असर टीम, उत्तर प्रदेश

15 वर्ष की तन्नु सहारनपुर जिले की रहने वाली है। वह ग्यारवी कक्षा में पढ़ती है। असर जाँच में तन्नु उच्चतम स्तर पर थी और अपनी टेस्टिंग के बाद तन्नु ने स्वयं से अपने भाई का भी असर टेस्ट किया। यहां तक कि उसने टेस्टिंग टूल की एक प्रति देने का निवेदन किया। तन्नु ने सर्वेयर को भरोसा भी दिलाया कि वह अपने मोहल्ले के सभी बच्चों का असर टेस्ट कर उनके माता-पिता से बात करेगी। उसकी दिलचस्पी देखते हुए सर्वेयर ने सर्वेक्षण समाप्ति के बाद टेस्टिंग टूल तन्नु को दे दिया।

बातचीत के दौरान उसने हमे बताया कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद चित्रकारी में अपना कैरियर बनाना चाहती है। तन्नु को बचपन से ही चित्रकारी का शौक है। कुछ मिनटों में ही वह किसी व्यक्ति या स्थान का चित्र बना सकती है। पढ़ाई में भी उसका प्रदर्शन हमेशा अच्छा रहता है। पर पिताजी के घर ना रहने कि वज़ह से कला सम्बन्धी किसी प्रतियोगिता की सूचना उसे नहीं मिल पाती है। तन्नु चाहती है कि उसे जिला या राज्य स्तर पर होने वाली हर कला प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले पर समय पर सूचना ना मिलने के कारण से वह हर बार इन प्रतियोगिताओं से वंचित रह जाती है।

हमारे देश के हर गाँव में तन्नु जैसे हजारों बच्चें है जिनमें हुनर की कोई कमी नहीं है। अगर इन बच्चों को समय पर उचित मार्गदर्शन और अवसर मिले तो ये बच्चे भी हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पाएंगे और आगे अपने इस जुनून को अपना कैरियर बना सकेंगें।

The Spirit of Master Trainers in Gujarat

Chirag Vyas
ASER Team, Gujarat

The ASER road is rarely straightforward. Like a roller coaster ride, it is full of twists and turns, ups and downs. And the Master Trainers (MTs) in Gujarat have consistently displayed the attitude of 'Impossible is nothing – and never give up.' The ASER 100 days timeline begins with the recruitment of MTs from Colleges and Universities, where the students eagerly wait for the ASER season to begin. In more than 20 districts of Gujarat, MTs from Social Work colleges have led ASER 2022. Colleges take ASER participation seriously. The Social Work colleges have formalized ASER participation as an assignment in the course. Point persons for each college facilitate the process to minimize delays and smoothen the participation process.

The 26 MTs throw the anchor and set to sail after the State Level Training, while each one is assigned an average of two districts – each MT travels 1000 to 1500 km over 45 days. They work with dedication and adjust their schedules in case a district partner asks for a date change.

The MTs show immense strength by working consistently, training and monitoring in the day and reviewing during the night! The ASER journey takes the MTs to diverse landscapes. When MTs work in places like Kutch or Diu, they take out some time to breathe in the fresh sea air and absorb the sight of vast deserts.

The ASER survey and its packed schedule becomes a mini though intense course in planning, understanding tools, monitoring, and rapport building. MTs end up trying out any and every means of transport to reach the last village as part of the survey! The level of commitment and understanding of the partners has also grown stronger over the years.

शिक्षा का एक नया सफर

शिक्षा का एक नया सफर करते हैं
चलो इस बार मिलकर असर करते हैं।
बच्चें हो या बूढ़े, बुनियादी सभी पढ़ें।
अब छूटे न कोई साथी और सभी बढ़ें।
शिक्षा का एक नया जतन करते हैं।
चलो इस बार मिलकर असर करते हैं।
बच्चों ने जो सीखा यह जानना है जरूरी।
पढ़ना–पढ़ाना एक कर्तव्य है या मजबूरी।
कुछ बुनियादी पढ़ाई और गणित करते हैं।
अंग्रेजी को भी थोड़ा अब सहज करते हैं।
एक बार फिर गाँव का सफर करते हैं।
चलो इस बार मिलकर असर करते हैं।

चलो फिर इस बार असर करें

बंद हुआ कोरोना का केहर
फिर चली शिक्षा की लहर
कुछ पढ़ते और कुछ पढ़ाते
जाने क्यों बच्चे समझ नही पाते
बच्चे भी परेशान हो रहे थे
सीखने से अंजान हो रहे थे
किसने कितना सीखा और कैसे जाने
कैसे सबके पढ़ने का स्तर पहचाने
सब मिलकर एक पहल करें
चलो फिर इस बार असर करें।

सनीत कुमार साहू
असर टीम, छत्तीसगढ़

असर एक अभियान

गाँव मे जाकर पता लगाएं,
शिक्षा का अभियान चलाएं!
भारत के कोने कोने से,
शिक्षा का स्तर असर बताए!!
गांव स्कूल घर मे जाकर,
जांचने बच्चों का स्तर!
भाषा-गणित-अंग्रेजी का
पता लगाने उच्चतम स्तर!!
अक्षर वाक्य कहानी पठन,
असर करे बच्चों का जतन!
देकर सबको सरल शिक्षण,
बच्चों का करना है परीक्षण!!
अच्छी शिक्षा अच्छा ज्ञान,
कितना जरूरी ये है जान!
हर बच्चे को सीखना होगा,
बुनियादी भाषा संख्या ज्ञान!!
बूढ़े बच्चे हो या जवान,
सबका हो शिक्षा पे ध्यान!
कितने बच्चे सिख रहे हैं,
असर रिपोर्ट है रोशन दान!!

भवेंद्र बघेल
असर टीम, छत्तीसगढ़

The ASER Journey

ASER is different! As someone who works as an ASER Manager in the Kerala team, I wouldn't dare just sum it up as a survey. The learning experience I have gained by working at ASER for around 4 months has changed my outlook of myself and society in various aspects.

It all began with the rigorous training days in Jaipur which in retrospect is one of my fondest memories of ASER. The preparation and groundwork we did there made us capable of implementing this process across Kerala. The best thing about ASER is that it was possible for me to be part of all the aspects of the process. I could observe, experience, and study Kerala as a whole within this short period. We made friends with children from all across the state and I am pretty sure that I will always have some families

open-heartedly welcoming me into their homes if I ever visit these places. The relations ASER helped me build throughout this period are very personal and I love ASER for this.

Thinking back, I could see those tensed little faces peeking a look at me while reading out from the ASER tool. It was always heartwarming to see the transformation of those tensed faces into little smiles when we lightened the situation by reassuring and encouraging them. I believe it was these small things that inspired me to continue with the survey despite the long walks and the hot sun.

Traveling across the beautiful landscapes of Kerala, the possibilities of meeting and making friends with different people, learning from and meeting people of different socio-economic conditions, and above all the possibility of bringing out the child in us, and I would give anything to experience all these emotions again.

Saintson Paul
ASER Team, Kerala

मैं असर हूँ

मैं असर हूँ, मैं एक दपर्ण हूँ
प्रारंम्भिक शिक्षा के हालात से
एक साक्षात्कार का,
नीतिओं का पुनरावलोकन करने
एवं उसमें आवश्यक सुधार का।

मैं असर हूँ, मैं एक स्वर हूँ
बगिया के कुम्हलाये हुए पौधों का,
उनकी क्षमताओं पर खड़े किये गए प्रश्न चिन्हों का
शून्य में घूरती एकटक निस्तेज आखों का
निशब्द कंठ एवं जड़त हो चुके उनके
चंचल-भावों का।

मैं असर हूँ, मैं आज की ताज़ा ख़बर हूँ
मीडिया, प्रेस एवं अख़बारों का
गाँव-गलियों और चौबारों का
शिक्षा नीतियों पर हो रही चर्चा और
इसके बदलाव संबंधी विचारों का।

मैं असर हूँ, मैं एक पहल हूँ
बच्चों की क्षमताओं को जानने का,
उनकी आवश्यकताओं को पहचानने का,
पहले सीखने की बुनियाद मजबूत बनाकर,
फिर उसपे ऊँची इमारत गढ़ने का।

मैं असर हूँ, मैं एक अवसर हूँ
बचपन का खिलकर लहलहाने का
चिड़ियों सा उन्मुक्त चहचहाने का
भ्रमर सा गीत गुनगुनाने का
अपने छोटे परों से हौसलों की,
एक ऊँची परवाज़ भरने का ||

शैलेन्द्र कुमार सिंह
प्रथम टीम, झारखंड

असर ने दस्तक दी है

असर ने दस्तक दी है अब जाग जाओ
सवेरा हो रहा है अब नींद त्याग जाओ
देखना है कलियों की प्रगति थमी तो नही
हे चमन के माली जमीं में नमीं की कमी तो नही
लेने ये खबर तुम हर एक बाग़ जाओ

असर का असर

गांवों की गलियों में जो शिक्षा की लहर है।
कहीं न कहीं ये असर का असर है।।

रोती थी शिक्षा, सोई सरकार थी।
उबरें तो कैसे समस्याएँ हज़ार थी।
आँकड़ों का आईना दिखाते आ रहे दस साल से।
प्रथम ने कमाल कर दिखाया कमाल से।
शिक्षा के स्तर की जो सबको खबर है।
कहीं न कहीं ये असर का असर है।।

पचास फीसदी बच्चे जो पढ़ते हैं पाँच में।
कहानी स्तर से नीचे आ जाते हैं जाँच मे।
करोड़ों खर्च हुए इंफ्रास्ट्रक्चर पर।
क्या फायदा जब बच्चे अटके हैं अक्षर पर।
शिक्षा की गुणवत्ता पर जो सरकारों की नजर है।
कहीं न कहीं ये असर का असर है।।

पंकज पांडे
असर टीम, झारखंड

बच्चों के भविष्य को लेकर हमारी आशाएं

नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार कानून के तहत आज देश में 6 से 14 साल के बच्चों के लिए शिक्षा एक मौलिक अधिकार के रूप में है, जिसमें कई ऐसे प्रावधान शामिल है जो यह सुनिश्चित करतें है कि अगर कानून को उचित और प्रभावी तरीके से लागू किया गया तो तस्वीर बिल्कुल बदल जाएगी। लेकिन शिक्षा का मतलब केवल बच्चों को स्कूल तक पहुँच बनाकर नि:शुल्क शिक्षा देना नहीं है। शिक्षा एक व्यापक शब्द है। हमें कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज हमारा जो समाज है, वह परिलक्षित करता है कि भारत का समाज कितना शिक्षित है। हमारे आसपास सामाजिक प्रदूषण के जो मामले सामने आ रहे हैं वे हमारी शिक्षा पद्धति पर बहुत बड़े प्रश्न चिन्ह ही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहना था कि "वास्तविक शिक्षा वह है जिससे व्यक्ति के चरित्र का निर्माण हो"। वास्तव में हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य यही होना चाहिए। लेकिन इस दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था में चरित्र निर्माण का कहीं कोई स्थान नहीं है। वहीं दूसरी ओर हम एक ऐसी शिक्षा पद्धति को अपनाए हुए हैं जो लोगों को इंसान और विद्धान के बजाए बेरोजगारों की फौज तैयार कर रही है। एक सर्वे के अनुसार हमारे देश के कई नौजवान नौकरी के योग्य नहीं है।

हम उन्हें ऐसी शिक्षा पद्धति प्रदान कर रहे हैं जो उन्हें बारहवी, स्नातक एवं स्नातकोत्तर डिग्री तो दे रही है किन्तु न तो कोई कौशल के विकास में सहायक है और न ही तो उन्हें जीवन का उद्देश्य समझ में आ रहा है।

किसी भी पीढ़ी को सजग, सतर्क, जिज्ञासु और क्रियाशील बनाने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त समय प्रारंभिक आयु के वे संवेदनशील वर्ष होते हैं, जिनमें कक्षा दस तक की शिक्षा प्राप्त की जाती है। जापान, जर्मनी जैसे देश द्वितीय विश्व युद्ध में भीषण तबाही और अपमानित स्थिति से अपनी भावी पीढ़ियों को सही ढंग से तैयार करके ही आज की अनुकरणीय स्थिति में पहुंच सके हैं। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा और अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा नियुक्ति पर सबसे अधिक ध्यान दिया। बच्चों को समय का महत्व बताया, परिश्रम की आवश्यकता समझाई। बच्चों के समक्ष देश के लिए संपूर्ण समर्पण तथा बलिदान करने वालों की शौर्य गाथाएं रखी । अध्यापकों ने अपने उत्तरदायित्व समझे कि वे देश के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं, केवल वेतन प्राप्ति के लिए कोई नौकरी नहीं कर रहे। वे जानते रहे कि अपने बच्चों के लिए वे आचार्य हैं, अनुकरणीय हैं, आइकान हैं। वे अपने आचरण से बच्चों को जीवन मूल्य सिखा रहे हैं। परिणामस्वरूप आज समय की पाबंदी और उत्पाद की गुणवत्ता के संबंध में जापान की वैश्विक स्तर पर सराहना की जाती है। यह रास्ता जो भी देश अपनाएगा, वह परिवर्तन की अपेक्षित सार्थकता अवश्य ही प्राप्त कर लेगा।

अमित कुमार पाण्डेय
मास्टर ट्रेनर, उत्तर प्रदेश

असर का रंग

पता न था कि असर सर्वेक्षण का
ऐसा रंग होगा,
उमंग भी होगी, कार्य भी होगा।
जीवन में बहुत कुछ नया अनुभव
मिला,
गांवों से जुड़े तो शिक्षा का स्तर पता
चला।
सोच रहे थे कैसे जुड़ेंगे गांव की
मिट्टी से,
जब गए तो मिला स्नेह और प्यार।
आशा है कि हमारी मेहनत भी रंग
लाएगी,
असर का असर शिक्षा को जीत
दिलाएगा।

प्रिया रानी दत्ता
स्वयंसेवक, झारखंड

असर की प्रासंगिता

मेरा नाम सुनील है। मैं असर में 12 साल से कार्यरत हूँ। इन 12 सालों में मुझे काफी कुछ सीखने को मिला। इन वर्षो में, असर सर्वेक्षण के दौरान मुझे अलग-अलग जिलों के अलग-अलग गावों में जाने का मौका मिला। इसी क्रम में, इस साल असर 2022 सर्वेक्षण के लिए मथुरा जिले के एक गॉव में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उस चयनित गॉव में मथुरा डायट के 2 डी.एल.एड विद्यार्थी सर्वेक्षण कर रहे थे। वे जिस घर का सर्वेक्षण कर रहे थे, वह घर उस गॉव के प्रधान जी का था। प्रधान जी के घर के बच्चों की जाँच असर टूल के माध्यम से चल रही थी। प्रधान जी सब कुछ ध्यानपूर्वक देख रहे थे और आश्वस्त थे कि उनके घर का चयनित बच्चा असर टूल में इंगित भाग का सवाल आसानी से हल कर सकता है लेकिन चयनित बच्चा बार-बार प्रयास करने के बाद भी भाग का सवाल गलत कर रहा था।

प्रधान जी यह सब देख के आश्चर्यचकित थे। उन्होंने अचानक असर टूल को अपने हाथ में ले लिया और स्वयं पास में बैठे कुछ और बच्चों से भाग का सवाल हल करवाने लगे। उनमें से कुछ बच्चे भाग का सवाल हल कर पाए तथा कुछ हल नहीं कर पाए। प्रधान जी वास्तव में अब काफी परेशान दिख रहे थे। अचानक उठे और स्कूल में चलने की बात करने लगे। मैं भी चकित था कि अचानक प्रधान जी को क्या हो गया। कुछ समय बाद हम स्कूल में पहुँच गए। वहां प्रधान जी स्कूल के अध्यापकों से बच्चों की शैक्षणिक स्थिति के बारे में बातचीत करने लगे।

स्कूल के अध्यापकों से प्रधान जी ने कहा कि, “मै चाहता हूँ कि मेरे गाँव के सभी बच्चे पढ़ना और गणित के सवाल (यह जो भाग का सवाल है) हल करना समझ जाए”। यह चर्चा आगे बढ़ी और दोनों तरफ से अपनी-अपनी बाते रखी गयी। स्कूल के सभी अध्यापकों ने स्कूल में बच्चों की उपस्थिति को लेकर अपनी चिंता जाहिर करी। प्रधान जी ने उनकी बात सुनी और आश्वस्त किया कि हम पूरी कोशिश करेंगे कि गाँव के सभी नामांकित बच्चें स्कूल आए। स्कूल के अध्यापकों ने प्रधान जी के जाने के बाद मुझसे कहा कि आज ऐसा क्या हो गया कि प्रधान जी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में बातचीत कर रहे हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ, आप कौन है कहाँ से आये है जैसे सवाल मुझसे पूछे गए। मैंने अपने बारे में तथा असर के बारे में उन्हें बताया। स्कूल के अध्यापकों ने बताया कि अगर सब ऐसे ही ध्यान दें तो हमें भी बच्चों को पढ़ाना आसान हो जायेगा और निर्धारित लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकेगा।

उपर्युक्त घटनाक्रम से यह महसूस हुआ कि असर सिर्फ एक सर्वेक्षण ना होकर समाज में लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने का माध्यम भी है। प्रमाण मिलना और उसके हर पहलू पर विचार करना वास्तव में आगे बढ़ने में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रधान जी को यह अहसास होना कि गाँव के बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तथा स्कूल-स्कूल में जाकर अध्यापकों से मिलना कही ना कही इस बात की प्रमाणिकता को सिद्ध करता है कि असर का सर्वेक्षण जिन गावो में, जिन बच्चों तक पहुँचता है वहां सबको सोचने के लिए मजबूर कर देता है। और यही से असर का असर होना शुरू हो जाता है और लोगों में शिक्षा के प्रति एक नई चेतना का जन्म होता है।

सुनील कुमार
असर टीम, उत्तर प्रदेश

It takes a village to raise a child

I visited Chhattisgarh in November for the ASER 2022 survey. During my visit, I monitored a primary school and met a senior teacher named Mr. Sinha. He talked to me about his journey as a teacher and also shared with me an interesting anecdote about the school.

Parents' reluctance to send children to government schools led the teachers to take an oath. One day all the teachers gathered to vow that within the next 3 months most students from the village will study in this school. They went to every house in the village and started convincing parents. If they couldn't provide better education than private schools within three months then the parents could disenroll their children. Quickly, they decorated every corner of the school making it more vibrant with colors and pictures.

Altering their classroom practices, the teachers introduced activities like yoga, class interaction and discussion,

presenting the news of the village, conversing in English, etc. Discussing the children's aims and career goals at length, the teachers started guiding them in realizing their dreams one small step at a time. The school invited professional doctors, engineers to guide the students. The teachers in the village also set a reading time for the children from 7 to 8 in the evening. During this time, if any villagers saw children outside their home they would remind their parents that it was the reading time. Some children were appointed to keep a check on their peers. In good humor, they were named CC Cameras as they would report to the teacher and it would be announced during the morning assembly. At present, the total number of students in this school is 177. Many government and private officials have visited this school. Now, children are enthusiastic about coming to school and studying. I was really happy to visit this school. I hope that other schools in the vicinity will take inspiration to not just increase their enrolment numbers but to also improve children's learning levels and guide them in achieving their aspirations.

Sajal Ghosh
ASER Team, West Bengal

असर की असरदार यादें

हर साल असर नए-नए आयाम एवं उम्मीदें लेकर आता है। बच्चों की भाषा और गणित की बुनियादी ज्ञान की परख करता चला आ रहा है असर। देश के सभी ग्रामीण जिलों को असर के लिए चुना जाता है, फिर उन ग्रामीण जिलों में सेम्पलिंग की विशेष पद्धति द्वारा सर्वे के लिए सिर्फ 30 गांवों का चयन होता है, यह गाँव जिले में कंही भी हो सकते हैं। कभी दूर तो कभी पास; कभी गाँव मैदानों में तो कभी गाँव पगडण्डी से चलकर दूर दराज पहाड़ो में। परन्तु असर के स्वयंसेवकों के लिए ऐसा कोई रास्ता नहीं है जो सर्वे करने में रुकावट डाल सके, असर के सिपाही सर्वे करने चले ही जाते है। असर 2022 के सफर में दो किस्से मुझे याद आते है जो मेरी स्मृति से भुलाये नही जाते।

पहला किस्सा है मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के एक सुदूर गाँव का जो घनी पहाड़ी के बीच बसा है। मैं बाइक में दिल्ली अससेस्मेंट टीम की स्टेफी के साथ करीब 120 किमी दूर पर पहाड़ी एवं जंगल के रास्ते पार करते हुए पहुँचा। नदियाँ, पहाड़ एवं कीचड़ भरा रास्ता बहुत संघर्ष से पर करते हुए हम गांव की तरफ जा रहे थे। इन रास्तो में चलते हुए बीच-बीच में संदेह हो रहा था कि यहाँ कोई गाँव है भी या नहीं; पहुंचे और यदि जंगली जानवर हमें मिल जाए तो क्या होगा? दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। मंजिल पाने की धुन में करीब 15 किमी का जंगल नुमा और पथरीला रास्ता हम ने पार किया। मन में भय भी था, पर स्वयं को तसल्ली देते हुए सोचते, जो होगा देखा जाएगा, बस बाइक से आगे बढ़ रहे थे। करीब 3 घंटे सफ़र करने के बाद जैसे-तैसे गाँव पहुंचे। गाँव पहाड़ी की तराई में बसा हुआ था, जहाँ सुन्दर बन से झूमता जंगल बड़ा मनोहर लग रहा था।

गाँव पहुँचने के बाद जैसे थकान मिट सी गई। इस अनोखे सफर के बाद बहुत थकान हो गई थी परन्तु उस गाँव में पहुंचकर कार्य करने का सुखद अनुभव अभी भी मन में रोमांच भर देता है।

दूसरा किस्सा जबलपुर का है। यहां के एक गांव के सर्वे में आयुवर्ग 10 से ऊपर के बच्चे थे ही नहीं, जितने बच्चों का सर्वे हुआ था अधिकतर 10 वर्ष से कम के थे, इस लिए वास्तविकता का पता करने इस गाँव को रीचेक के लिए चुना गया और मैं निकल पड़ा गाँव की ओर। ब्लाक तक बस से पहुँचा। फिर ब्लाक से गाँव की 15 किमी की दूरी एक जीप से करनी थी। यह गांव तक पहुंचने का एकमात्र साधन था। जीप में बैठने के बाद मैने करीब आधा घंटा इंतजार किया फिर जीप भरना शुरू हुई। लोग स्वतः ही जीप में सिमटे हुए बैठे जा रहे थे, जिसको जहाँ जगह मिले बैठे जा रहे थे। कुछ लोग शीट पर तो कुछ जीप की बोनेट पर बैठ गए, कोई गेट पर खड़ा हो गया तो कोई जीप के चारो ओर, जहाँ जो पकड़ने को मिले उसे पकड़कर खड़े हो गए; कुछ लोग तो जीप के ऊपर बैठ गए। अंत में जीप में करीब 25-27 लोग बैठ गए होंगे। मुझे डर लग रहा था कि इस प्रकार हम गाँव क्या पहुँच जायेंगे? ड्राईवर से बात करके पता चला कि यह इनका रोज का काम है। ड्राईवर जोखिम भरे रास्तों में भी गाड़ी को बड़ी सहजता से चला रहा था। मैं ड्राईवर के साथ वाली सीट में बैठकर अचंभित था कि लोग कैसे अपनी जान जोखिम में डालकर सफर करते है और फिर भी मन में कोई डर न संताप; सभी बड़ी सहजता से यात्रा करते हैं। गाँव के बड़े बुजुर्ग बड़े मिलनसार थे। मैं इस बात से अचंभित था कि इस गाँव में आयुवर्ग 10 से अधिक के बच्चे रहते ही नहीं हैं; वह या तो अपने किसी रिश्तेदार के घर जाकर पढ़ते हैं या होस्टल में रहकर पढ़ते है क्योंकि यहाँ मिडिल या इससे ऊपर का स्कूल नही है। सभी अभिभावकों में बच्चों को पढ़ाने की उमंग देखने को मिल रही थी। यह गाँव आदिवासी बाहुल्य गाँव था, कच्ची मिट्टी के घर एवं उसमे सुंदर रंग- रोगन मुझे आकर्षित करता था। यहाँ सभी अभिभावक बच्चों को नियमित स्कूल पहुंचाते थे। इस गाँव में शिक्षा के प्रति सभी जागरूक नजर आ रहे थे। काम ख़त्म होने के बाद उसी जीप से मैं वापस पहुँचा। वह जीप का सफर असर के सफर में एक स्मरणीय छबि के रूप में बसी हुई है। ऐसे किस्से एवं घटना असर को और असरदार बनाते है।

श्याम कुमार कोलारे
असर टीम, मध्यप्रदेश

www.asercentre.org